



नील मणि पति परमेश्वर

सुबह-सुबह गुप्ता जी के कमरे से दो ज़ोरदार छींकें गूँजीं — “छीं... छीं...”

बस फिर क्या था, मानो प्रधानमंत्री ने राष्ट्र को संबोधित कर दिया हो—“छींकों को हल्के में मत लो, ये प्रकृति का अलार्म है!”

गुप्ता जी तुरंत ही सचेत हो गए और अपनी अध्यापिका पत्नी को भी सचेत किया- उनकी देखभाल में कोई कोताही ना बरती जाए। “गर्म पानी, फिर तुलसी-अदरक-लौंग-बड़ी इलायची वाली चाय, और हाँ... नींबू-शहद का काढ़ा भी आदि का बड़े अधिकारपूर्वक आदेश पारित कर दिया।”

शाम को बैंक से लौटते तो पूरे पति-परमेश्वर अंदाज में ब्रिफ़केस पटका और चादर तानकर बिस्तर में घुस गए। पत्नी कॉलेज से लौटीं और पति-सेवा-धर्म निभाने में लग गई।

तीन दिन बाद -

गुप्ता जी तो भले चंगे ही थे या हो गए, पर पत्नी जी का आज सिर भारी और शरीर टूट रहा था। कॉलेज जाने की हिम्मत नहीं हो रही थी तुरंत थर्मामीटर निकाल बुखार नापा तो 102 डिग्री...ओहो! कॉलेज सूचना देकर, जरूरी काम - गुप्ता जी का लंच बॉक्स तैयार कर, चादर लपेटकर लेट गई।

गुप्ता जी जाते समय दवा लाने का वादा कर बैंक रपट लिए।

शाम को जब घर में घुसे। मेज पर ब्रिफ़केस पटक चाय की गुहार लगाई; साथ ही फ़रमाया - हा--- बहुत थक गया, अब बढ़िया सी चाय और कड़क पकौड़ी मिल जाएँ तो मजा ही आ जाए। पत्नी जी, जो बिस्तर से चिपकी पड़ी थी; चादर में दुपकी रही।

कोई जवाब न पाकर गुप्ता जी झल्लाए से, कमरे में प्रविष्ट हुए, देखा— पत्नी जी चादर में सिकुड़ी पड़ी हैं; थर्मामीटर तकिए के पास पड़ा है।

सुबह का दृश्य याद आते ही खिसियाए से गुप्ता जी उल्टे पांव दवा लाने लौट पड़े।